अंक 289 वर्ष 59

भाषा

मार्च–अप्रैल 2020

वैदिक ज्ञान-विज्ञान विशेषांक

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार

Scanned by CamScanner

पंजी संख्या 10646 / 61
ISSN 0523-1418

भाषा (द्वैमासिक)
BHASHA-BIMONTHLY
डी. पी. सी. 305-2-2020
700

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्

हिंदी

केंद्रीय निदेशालय

Digital India
Power To Empower

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
पश्चिमी खंड–7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–110066
www.chdpublication.mhrd.gov.in

प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली – 110064 द्वारा मुद्रित

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से
आपने लिखा
संपादकीय
आलेख
खंड-I
वेद एवं विज्ञान

1. संस्कृत साहित्य एवं वैदिक भूगर्भविज्ञान	डॉ. नीरज शर्मा	09
2. संस्कृत-हिंदी भाषा-साहित्य में वैदिक-मनोविज्ञान	डॉ. विनोद कुमार	13
3. वैदिक संस्कृत भाषा एवं नीतिविज्ञान	डॉ. विशाल भारद्वाज	18
4. संस्कृत धर्मशास्त्र एवं वैदिक राजधर्म	डॉ. सलोनी	22
5. वैदिक ग्रंथों में न्याय की अवधारणा एवं वर्तमान विधि व्यवस्था	डॉ. प्रशांत मिश्र	28
6. वैदिक संस्कृत : वैज्ञानिक एवं राजनैतिक चिंतन	डॉ. दलबीर सिंह चाहल	33
7. वैदिक साहित्य : भारतीय जिजीविषा का आईना	डॉ. राजहंस कुमार	36
8. योगदर्शन और वेद : एक समग्र विवेचना	अखिलेश आर्येंदु	42
9. वैदिक साहित्य और विविध विषयक नीतियाँ	डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह	50
10. वैदिक ज्योतिष-विज्ञान अथवा आस्था	डॉ. शालिनी राजवंशी	54
11. वैदिक एवं लोकसाहित्य में ज्ञान-विज्ञान	डॉ. अर्चना झा	57
12. वैदिक वाङ्मय एवं पर्यावरण विज्ञान	डॉ. कपिल गौतम	62
13. वर्ण व्यवस्था का वैदिक विज्ञान	डॉ. माधव कृष्ण	70
14. वेदों में कृषि विज्ञान चिंतन	प्रोफेसर (डॉ.) दिनेश चमोला 'शैलेश'	77
15. वैदिक वाङ्मय और तकनीकी : यातायात के प्राचीन वैज्ञानिक साधनों के संदर्भ में	डॉ. (कु.) साधना जनसारी	81
16. वेदों में कृषि विज्ञान	डॉ. किरण शर्मा	85
17. वैदिक काल और वर्तमान ज्यामितियों का अध्ययन	अवनीश कुमार चतुर्वेदी	89
18. वेद-साहित्य और लोकमंगल का भाव	डॉ. नोदनाथ मिश्र	92
19. वैश्विक ज्ञान-विज्ञान की संपूर्ण क्रियाओं का मूल उत्स : वेद	डॉ. पूरन चंद टंडन	96

Scanned by CamScanner

खंड-II

वेद-भारतीय भाषाओं के संदर्भ में

20. भारतीय भाषाओं में वैदिक ज्ञान-विज्ञान	आ. अ. वेणाल	100
21. भारतीय भाषाएँ एवं वैदिक आयुर्वेद (मलयालम भाषा के संदर्भ में)	लक्ष्मी वी.	103
22. भारतीय भाषाएँ एवं वैदिक चिकित्सा विज्ञान	अमित सिंह	105
23. भारतीय भाषाओं में प्राचीन जैन गणित विज्ञान	हरीश जैन	112
24. भारतीय भाषाओं में वैदिक कला विज्ञान : असमिया के विशेष संदर्भ में	डॉ. अंजू लता	115
25. भारतीय भाषाएँ एवं वैदिक ज्ञान विज्ञान : कन्नड भाषा के संदर्भ में	डॉ. शोभा	120
26. भारतीय भाषाएँ और वैदिक व्याकरण	डॉ. रेखा	124
27. भारतीय भाषाओं में वैदिक ज्ञान परंपरा : संस्कृत भाषा के विशेष संदर्भ में	डॉ. विदुषी शर्मा	129
28. कश्मीर की वैदिक परंपरा एवं भाषा	डॉ. प्रियंजन	140
29. मलयालम साहित्य में वैदिक दर्शन और योगशास्त्र	डॉ. के. वनजा	144

खंड-III

वेद एवं भारतीय साहित्य

30. काव्य और छांदोग्योपनिषद् की प्राणमयी संस्कृति	डॉ. राजेश कुमार	151
31. संस्कृत और वैदिक धर्म : श्रीमद्भगवद्गीता के विशेष संदर्भ में	प्रो. रवींद्र कुमार	156
32. स्वामी दयानंद सरस्वती का वेदों के प्रचार में योगदान	डॉ. राजरानी शर्मा	158
33. भारतीय भाषाओं में वेदों की नैतिक शिक्षा (महर्षि दयानंद सरस्वती के 'वेदामृत' एवं आचार्य विनोवा भावे के 'वेदामृत' के संदर्भ में)	सागर चौधरी	165
34. वैदिक सौंदर्यबोध और रामविलास शर्मा का चिंतन	अमन कुमार	167
35. 'कामायनी' में वैदिक ज्ञान-विज्ञान	डॉ. साक्षी जोशी	174
36. 'वैश्वानर' उपन्यास में वैदिक संदर्भ	डॉ. उमेश कुमार शुक्ल	179

हिंदी कविता

37. वेद सभ्यता के आदि ग्रंथ	सतीश श्रोत्रिय	183
संपर्क सूत्र		184
सदस्यता फार्म		

Scanned by CamScanner

भारतीय भाषाओं में वैदिक कला विज्ञान : असमिया के विशेष संदर्भ में

डॉ. अंजू लता

मानव मन एवं मस्तिष्क की उच्चतम एवं प्रखरतम भावों की अभिव्यक्ति व लोगों की संस्कृति में एक सुल्यतम विरासत लाने वाली कला का विकास कोई नवीन बात नहीं है। मानव सभ्यता व संस्कृति के विकास एवं उत्पत्ति के साथ-साथ कलाओं का भी निरंतर विकास हुआ है। मानव सभ्यता का विकास तथा भारतीय संस्कृति जितनी पुरानी है, उतनी ही पुरानी कलाएँ एवं कला पद्धतियाँ हैं। पूरे देश में यदि नजर फैलाएँ तो यह देखने को मिलेगा कि मानव सभ्यता और संस्कृति के साथ कलाओं का आपसी सह-संबंध रहा है। जिस तरह मानव जीवन वैविध्यपूर्ण है, उसी भांति कलाओं का विकास एवं मानव समाज में उसका आगमन विविधता से परिपूर्ण है। सभी कलाएँ मानव जीवन के हर पहलू, इतिहास, सभ्यता-संस्कृति तथा उत्थान-पतन आदि को हमेशा एक दस्तावेज के रूप में परखती हैं। इस संदर्भ में कला एक बाह्य माध्यम या पद्धति द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति को कहा जा सकता है। कला के संबंध में विद्वानों का अलग-अलग मत रहा है, इस दृष्टि से डॉ. कृष्ण गोपाल का मानना है कि जो लोगों को आनंद प्रदान करता है व कला अपूर्णता को पूर्णता प्रदान करता है तथा कलाकार किसी भी कला को गाता है, उसे बनाता व एक स्वर प्रदान करने वाला होता है। अत: विस्तृत रूप से कला को हम एक मानव मन की अभिव्यक्ति कह सकते हैं जिसके माध्यम से कलाकार किसी भी कला को गति प्रदान करने के साथ ही एक आकार प्रस्तुत करता है। विविधता में एकता व अनेकता में एकता की भूमिका रखने वाले देश भारत में कला का आरंभ प्रागैतिहासिक काल से ही दिखाई पड़ता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय कलाओं का विकास वैदिक काल से पूर्व ही मिलता है। इस संदर्भ में कहा जाए तो भारतीय कलाओं का विकास सर्वप्रथम ग्रामीण सभ्यता में हुआ है। उदाहरणस्वरूप सिंधु घाटी सभ्यता में प्राप्त अवशेषों को कलाओं का प्रारंभिक नमूना माना जाता है। क्योंकि इस कला की खोज ईसा पूर्व तीन हजार साल पुरानी मानी जाती है। भारतीयों कलाओं का स्वरूप मुख्य रूप से सिंधु घाटी सभ्यता, अजंता, एलोरा एवं प्राचीन मठ और मंदिरों में दिखाई पड़ता है - (द हिस्ट्री ऑफ इंडियन आर्ट, अनिल राव संध्या केट्कार)। वैदिक काल में विभिन्न नदियों की घाटियों में पुरातत्वविदों की खुदाई में मिले असंख्य पाषाण उपकरण भारत के आदि मनुष्य के कलात्मक प्रवृत्तियों के साक्षात प्रमाण है। भारतीय वैदिक कला मूलत: मूर्तिकला और वास्तुकला के संदर्भ पर आधारित है, जिसका वर्णन साहित्य में 1500 से 800 ईसा पूर्व के बीच मिलता है। इस युग में वास्तुकला न तो गतिशील थी न स्थायी और न ही शहरी विकास में केंद्रित थी। उस समय की वास्तुकला की द्रविड में पिरामिड के आकार के मंदिर शामिल थे, जो कि देवताओं, नर्तक, राजाओं और योद्धाओं की कई प्रतिमाओं से मिलकर पत्थर पर नक्शा तैयार किया जाता था। इसके अलावा कलाओं में गोल और चोकोर आकार की झोपड़ियों को भी देखा जाता है (द हिस्ट्री ऑफ इंडियन आर्ट, अनिल राव संध्या केट्कार)। वास्तुकला निर्माण में इस युग में व्यवहृत सामग्रियाँ हैं - टिन, सीसा, चाँदी, तांबा आदि धातुओं का उल्लेख वैदिकालीन साहित्य में

Scanned by CamScanner